



Mr. Tanish Mehra

24 Aug 2012

08:00 AM

Itarsi

Model: Web-MyKundli

Order No: 120011301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 24/08/2012
दिन _____: शुक्रवार
जन्म समय _____: 08:00:00 घंटे
इष्ट _____: 05:02:46 घटी
स्थान _____: Itarsi
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 22:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:48:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:18:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 07:41:12 घंटे
वेलान्तर _____: -00:02:19 घंटे
साम्पातिक काल _____: 05:52:18 घंटे
सूर्योदय _____: 05:58:53 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:42:48 घंटे
दिनमान _____: 12:43:55 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 07:18:11 सिंह
लग्न के अंश _____: 04:11:23 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: वृश्चिक - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: विशाखा - 4
नक्षत्र स्वामी _____: गुरु
योग _____: ऐन्द्र
करण _____: वणिज
गण _____: राक्षस
योनि _____: व्याघ्र
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: कीटक
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: तो-तोरल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1934	भाद्रपद	2
पंजाबी	संवत : 2069	भाद्रपद	9
बंगाली	सन् : 1419	भाद्रपद	8
तमिल	संवत : 2069	आवनी	9
केरल	कोल्लम : 1188	चिंगम	8
नेपाली	संवत : 2069	भाद्रपद	9
चैत्रादि	संवत : 2069	भाद्रपद	शुक्ल 7
कार्तिकादि	संवत : 2069	भाद्रपद	शुक्ल 7

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 7
तिथि समाप्ति काल _____ : 08:26:51
जन्म तिथि _____ : 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : विशाखा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 11:52:00 घंटे
जन्म योग _____ : विशाखा
सूर्योदय कालीन योग _____ : ऐन्द्र
योग समाप्ति काल _____ : 21:12:55 घंटे
जन्म योग _____ : ऐन्द्र
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 08:26:51 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 46:56:21
भभोग _____ : 56:36:22
भोग्य दशा काल _____ : गुरु 2 वर्ष 8 मा 23 दि

घात चक्र

मास _____ : आश्विन
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : रेवती
योग _____ : व्यतिपात
करण _____ : गर
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : वृश्चिक
सूर्य _____ : मकर
चन्द्र _____ : वृष
मंगल _____ : कुम्भ
बुध _____ : वृश्चिक
गुरु _____ : मीन
शुक्र _____ : मेष
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : वृष

Shri Dadaji Jyotish kendra

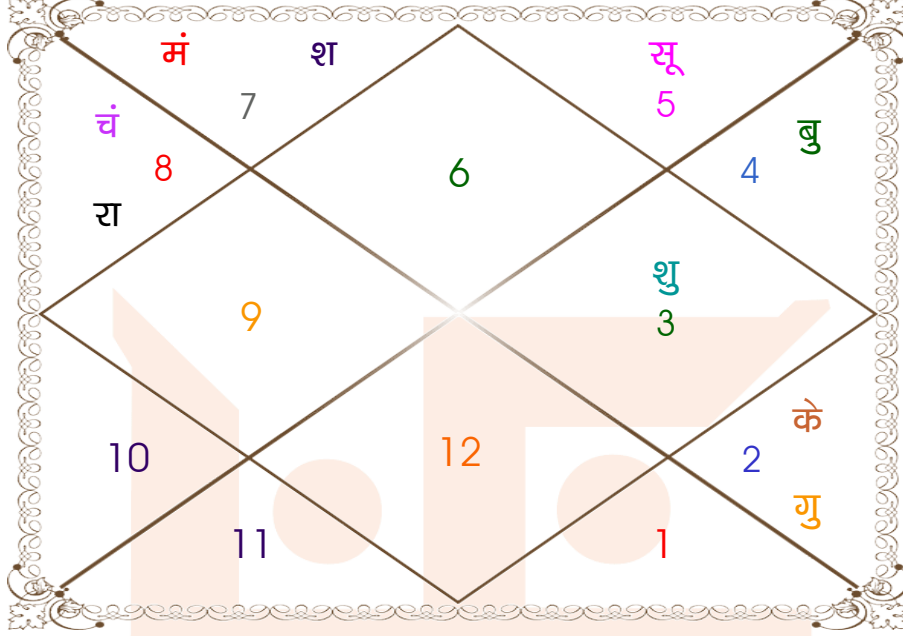
Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

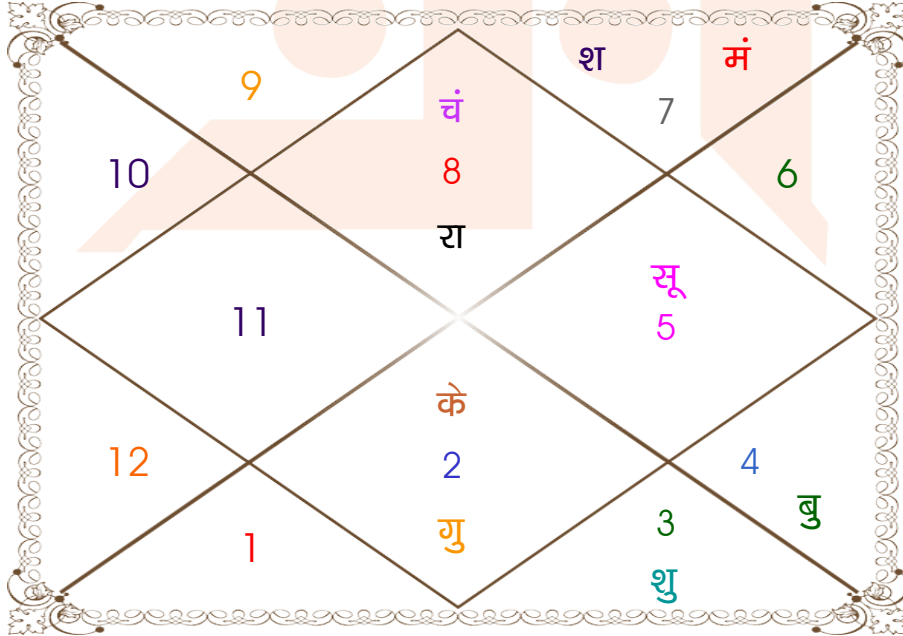
dadajiJyotishkendra@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

		के गु	शु
			बु
			सू
रा चं	श मं		ल

लग्न कुण्डली

के गु		
शु		
बु		
सू	मं श	चं रा

विंशोत्तरी
गुरु 2वर्ष 8मा 23दि
गुरु

24/08/2012

19/05/2119

गुरु	18/05/2015
शनि	18/05/2034
बुध	18/05/2051
केतु	18/05/2058
शुक्र	18/05/2078
सूर्य	18/05/2084
चन्द्र	18/05/2094
मंगल	19/05/2101
राहु	19/05/2119

योगिनी
धान्या 0वर्ष 6मा 4दि
उल्का

27/02/2022

28/02/2028

उल्का	27/02/2023
सिद्धा	28/04/2024
संकटा	28/08/2025
मंगला	28/10/2025
पिंगला	27/02/2026
धान्या	29/08/2026
भ्रामरी	29/04/2027
भद्रिका	28/02/2028

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

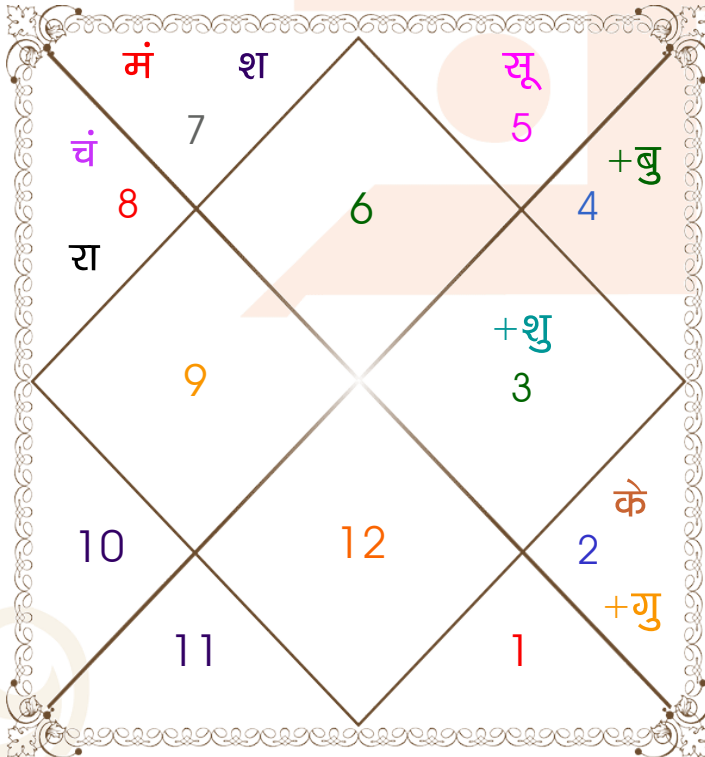
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	04:11:23	333:09:03	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	---
सूर्य			सिंह	07:18:11	00:57:51	मघा	3	10	सूर्य	केतु	राहु	मूलत्रिकोण
चंद्र			वृश्चि	01:03:27	14:07:38	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	मंगल	नीच राशि
मंगल			तुला	06:15:27	00:38:22	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	सम राशि
बुध			कर्क	21:20:57	01:38:17	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	शत्रु राशि
गुरु			वृष	19:39:22	00:07:22	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
शुक्र			मिथु	21:47:56	01:00:49	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	शनि	मित्र राशि
शनि			तुला	01:29:29	00:05:12	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	उच्च राशि
राहु	व		वृश्चि	06:25:43	00:00:08	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	शत्रु राशि
केतु	व		वृष	06:25:43	00:00:08	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	सम राशि
हर्ष	व		मीन	13:50:35	00:01:47	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	---
नेप	व		कुंभ	07:43:02	00:01:39	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	राहु	---
प्लूटो	व		धनु	13:04:19	00:00:44	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
दशम भाव			मिथु	04:12:00	--	मृगशिरा	--	5	बुध	मंगल	शुक्र	--

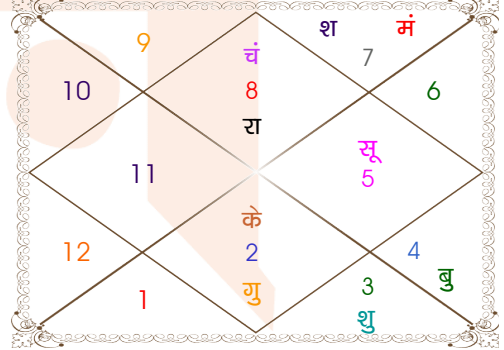
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:02:17

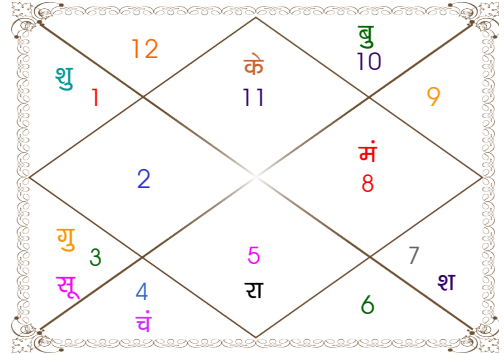
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 19:11:29	कन्या 04:11:23
2	कन्या 19:11:29	तुला 04:11:35
3	तुला 19:11:41	वृश्चिक 04:11:47
4	वृश्चिक 19:11:54	धनु 04:12:00
5	धनु 19:11:54	मकर 04:11:47
6	मकर 19:11:41	कुम्भ 04:11:35
7	कुम्भ 19:11:29	मीन 04:11:23
8	मीन 19:11:29	मेष 04:11:35
9	मेष 19:11:41	वृष 04:11:47
10	वृष 19:11:54	मिथुन 04:12:00
11	मिथुन 19:11:54	कर्क 04:11:47
12	कर्क 19:11:41	सिंह 04:11:35

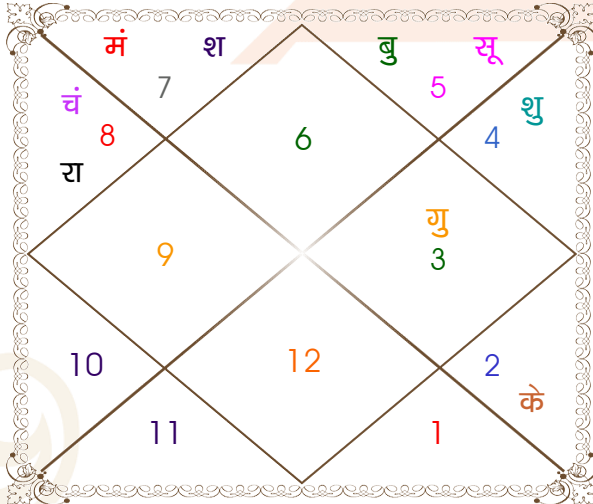
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या 04:11:23	
2	तुला 03:03:08	
3	वृश्चिक 03:28:03	
4	धनु 04:12:00	
5	मकर 04:52:43	
6	कुम्भ 05:13:59	
7	मीन 04:11:23	
8	मेष 03:03:08	
9	वृष 03:28:03	
10	मिथुन 04:12:00	
11	कर्क 04:52:43	
12	सिंह 05:13:59	

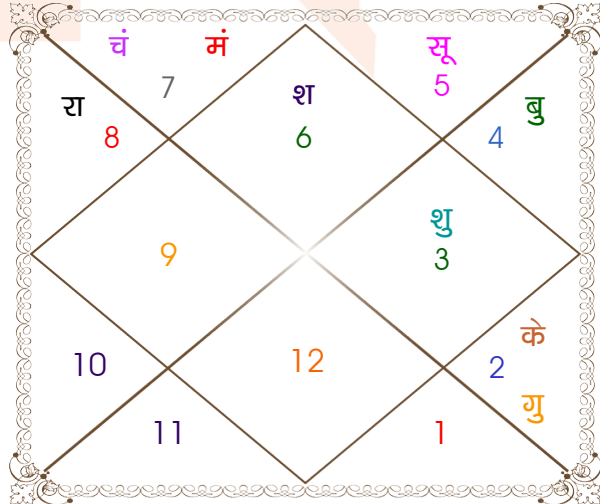
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 2 वर्ष 8 मास 23 दिन

गुरु 16 वर्ष 24/08/2012 18/05/2015	शनि 19 वर्ष 18/05/2015 18/05/2034	बुध 17 वर्ष 18/05/2034 18/05/2051	केतु 7 वर्ष 18/05/2051 18/05/2058	शुक्र 20 वर्ष 18/05/2058 18/05/2078
00/00/0000	शनि 21/05/2018	बुध 14/10/2036	केतु 14/10/2051	शुक्र 17/09/2061
00/00/0000	बुध 28/01/2021	केतु 11/10/2037	शुक्र 14/12/2052	सूर्य 17/09/2062
00/00/0000	केतु 09/03/2022	शुक्र 11/08/2040	सूर्य 20/04/2053	चंद्र 18/05/2064
00/00/0000	शुक्र 09/05/2025	सूर्य 17/06/2041	चंद्र 20/11/2053	मंगल 18/07/2065
00/00/0000	सूर्य 21/04/2026	चंद्र 17/11/2042	मंगल 18/04/2054	राहु 17/07/2068
00/00/0000	चंद्र 20/11/2027	मंगल 14/11/2043	राहु 06/05/2055	गुरु 18/03/2071
24/08/2012	मंगल 29/12/2028	राहु 02/06/2046	गुरु 11/04/2056	शनि 18/05/2074
मंगल 23/12/2012	राहु 05/11/2031	गुरु 07/09/2048	शनि 21/05/2057	बुध 18/03/2077
राहु 18/05/2015	गुरु 18/05/2034	शनि 18/05/2051	बुध 18/05/2058	केतु 18/05/2078
सूर्य 6 वर्ष 18/05/2078 18/05/2084	चंद्र 10 वर्ष 18/05/2084 18/05/2094	मंगल 7 वर्ष 18/05/2094 19/05/2101	राहु 18 वर्ष 19/05/2101 19/05/2119	गुरु 16 वर्ष 19/05/2119 00/00/0000
सूर्य 05/09/2078	चंद्र 18/03/2085	मंगल 14/10/2094	राहु 30/01/2104	गुरु 07/07/2121
चंद्र 06/03/2079	मंगल 17/10/2085	राहु 02/11/2095	गुरु 25/06/2106	शनि 18/01/2124
मंगल 12/07/2079	राहु 18/04/2087	गुरु 08/10/2096	शनि 01/05/2109	बुध 25/04/2126
राहु 05/06/2080	गुरु 17/08/2088	शनि 16/11/2097	बुध 18/11/2111	केतु 01/04/2127
गुरु 24/03/2081	शनि 18/03/2090	बुध 14/11/2098	केतु 05/12/2112	शुक्र 30/11/2129
शनि 06/03/2082	बुध 18/08/2091	केतु 12/04/2099	शुक्र 06/12/2115	सूर्य 18/09/2130
बुध 10/01/2083	केतु 18/03/2092	शुक्र 12/06/2100	सूर्य 30/10/2116	चंद्र 18/01/2132
केतु 18/05/2083	शुक्र 16/11/2093	सूर्य 18/10/2100	चंद्र 01/05/2118	मंगल 25/08/2132
शुक्र 18/05/2084	सूर्य 18/05/2094	चंद्र 19/05/2101	मंगल 19/05/2119	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 2 वर्ष 8 मा 24 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य 09/05/2025 21/04/2026	शनि - चंद्र 21/04/2026 20/11/2027	शनि - मंगल 20/11/2027 29/12/2028	शनि - राहु 29/12/2028 05/11/2031	शनि - गुरु 05/11/2031 18/05/2034
सूर्य 26/05/2025 चंद्र 24/06/2025 मंगल 14/07/2025 राहु 04/09/2025 गुरु 21/10/2025 शनि 14/12/2025 बुध 02/02/2026 केतु 22/02/2026 शुक्र 21/04/2026	चंद्र 08/06/2026 मंगल 12/07/2026 राहु 06/10/2026 गुरु 22/12/2026 शनि 24/03/2027 बुध 14/06/2027 केतु 18/07/2027 शुक्र 22/10/2027 सूर्य 20/11/2027	मंगल 14/12/2027 राहु 12/02/2028 गुरु 06/04/2028 शनि 09/06/2028 बुध 06/08/2028 केतु 29/08/2028 शुक्र 05/11/2028 सूर्य 25/11/2028 चंद्र 29/12/2028	राहु 03/06/2029 गुरु 20/10/2029 शनि 03/04/2030 बुध 28/08/2030 केतु 28/10/2030 शुक्र 19/04/2031 सूर्य 10/06/2031 चंद्र 05/09/2031 मंगल 05/11/2031	गुरु 07/03/2032 शनि 01/08/2032 बुध 10/12/2032 केतु 02/02/2033 शुक्र 06/07/2033 सूर्य 21/08/2033 चंद्र 06/11/2033 मंगल 30/12/2033 राहु 18/05/2034
बुध - बुध 18/05/2034 14/10/2036	बुध - केतु 14/10/2036 11/10/2037	बुध - शुक्र 11/10/2037 11/08/2040	बुध - सूर्य 11/08/2040 17/06/2041	बुध - चंद्र 17/06/2041 17/11/2042
बुध 20/09/2034 केतु 10/11/2034 शुक्र 06/04/2035 सूर्य 20/05/2035 चंद्र 01/08/2035 मंगल 21/09/2035 राहु 31/01/2036 गुरु 27/05/2036 शनि 14/10/2036	केतु 04/11/2036 शुक्र 03/01/2037 सूर्य 21/01/2037 चंद्र 21/02/2037 मंगल 14/03/2037 राहु 07/05/2037 गुरु 24/06/2037 शनि 21/08/2037 बुध 11/10/2037	शुक्र 01/04/2038 सूर्य 23/05/2038 चंद्र 17/08/2038 मंगल 17/10/2038 राहु 21/03/2039 गुरु 06/08/2039 शनि 17/01/2040 बुध 11/06/2040 केतु 11/08/2040	सूर्य 26/08/2040 चंद्र 21/09/2040 मंगल 09/10/2040 राहु 25/11/2040 गुरु 05/01/2041 शनि 23/02/2041 बुध 08/04/2041 केतु 27/04/2041 शुक्र 17/06/2041	चंद्र 30/07/2041 मंगल 30/08/2041 राहु 15/11/2041 गुरु 23/01/2042 शनि 15/04/2042 बुध 27/06/2042 केतु 28/07/2042 शुक्र 22/10/2042 सूर्य 17/11/2042
बुध - मंगल 17/11/2042 14/11/2043	बुध - राहु 14/11/2043 02/06/2046	बुध - गुरु 02/06/2046 07/09/2048	बुध - शनि 07/09/2048 18/05/2051	केतु - केतु 18/05/2051 14/10/2051
मंगल 08/12/2042 राहु 31/01/2043 गुरु 20/03/2043 शनि 17/05/2043 बुध 07/07/2043 केतु 28/07/2043 शुक्र 27/09/2043 सूर्य 15/10/2043 चंद्र 14/11/2043	राहु 02/04/2044 गुरु 04/08/2044 शनि 29/12/2044 बुध 10/05/2045 केतु 04/07/2045 शुक्र 06/12/2045 सूर्य 21/01/2046 चंद्र 09/04/2046 मंगल 02/06/2046	गुरु 21/09/2046 शनि 30/01/2047 बुध 27/05/2047 केतु 14/07/2047 शुक्र 29/11/2047 सूर्य 10/01/2048 चंद्र 19/03/2048 मंगल 06/05/2048 राहु 07/09/2048	शनि 10/02/2049 बुध 29/06/2049 केतु 25/08/2049 शुक्र 05/02/2050 सूर्य 27/03/2050 चंद्र 16/06/2050 मंगल 13/08/2050 राहु 07/01/2051 गुरु 18/05/2051	केतु 27/05/2051 शुक्र 21/06/2051 सूर्य 28/06/2051 चंद्र 11/07/2051 मंगल 19/07/2051 राहु 11/08/2051 गुरु 31/08/2051 शनि 23/09/2051 बुध 14/10/2051

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	1
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 1
शत्रु अंक	7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

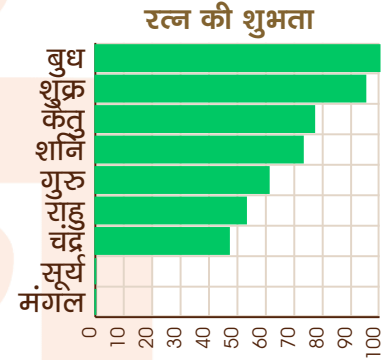
dadajijyotishkendra@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	95%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, धन
लहसुनिया	केतु	77%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	73%	धन, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
पुखराज	गुरु	61%	भाग्योदय, सुख, दम्पति
गोमेद	राहु	53%	पराक्रम, धन
मोती	चंद्र	47%	पराक्रम हानि, हानि
माणिक्य	सूर्य	0%	व्यय
मूंगा	मंगल	0%	धन हानि, दुर्घटना, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	18/05/2015	0%	55%	6%	89%	73%	83%	73%	53%	77%
शनि	18/05/2034	0%	22%	0%	100%	61%	100%	86%	59%	64%
बुध	18/05/2051	0%	22%	0%	100%	61%	100%	73%	53%	77%
केतु	18/05/2058	0%	22%	6%	100%	61%	100%	61%	31%	89%
शुक्र	18/05/2078	0%	22%	0%	100%	61%	100%	80%	59%	83%
सूर्य	18/05/2084	10%	55%	6%	100%	67%	83%	61%	31%	64%
चंद्र	18/05/2094	0%	61%	0%	100%	61%	95%	73%	31%	64%
मंगल	19/05/2101	0%	55%	19%	89%	67%	95%	73%	31%	83%
राहु	19/05/2119	0%	22%	0%	100%	61%	100%	80%	66%	64%

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	19/09/2090-25/10/2090 21/05/2091-02/07/2093	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसाय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्मकाल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में द्वादश भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि चन्द्र से मांगलिक होने का दोष अधिक प्रबल नहीं होता। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति किंचित व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आप समय समय पर व्यय करते रहेंगे। जिससे आपको अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प रहेगा। तथा सामान्य रूप से धनार्जन होता रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य आपका मध्यम रहेगा। मानसिक परेशानी की अनुभूति आपको समय समय पर होती रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे लेकिन उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब हो सकता है परन्तु इस कार्य में सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगा। साथ ही विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य के कारण अनुकूल रहेगा तथा इसका उचित उपभोग करने में आप समर्थ रहेंगे।

चन्द्रकुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होगी परन्तु प्रचुर मात्रा में धनार्जन होने के कारण इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में भी आप सफल होंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से भाई बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पराक्रम तथा आत्मबल में वृद्धि होगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। षष्ठ

भावस्थ मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आपको सफलता मिलेगी। यदा कदा पित या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन परस्पर सामंजस्य के कारण आप सुखी दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे परस्पर मांगलिक दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु सदृश पाप ग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक आप अपने दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में वासुकि नामक कालसर्प योग विद्यमान है। परिणामस्वरूप धार्मिक कार्य (पूजा, पाठ, दान, हवन, आदि) में जातक को अरुचि रहती है। भाग्योदय होने में व्यवधान एवं नौकरी व्यवसाय में संघर्ष करना पड़ता है। कभी जातक को राजकीय सेवा के अवसर भी मिल जाते हैं। जातक को पद प्रतिष्ठा प्राप्त करने में संघर्ष करना पड़ता है तथा यश व पराक्रम में विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है। जातक विदेश गमन करता है और वहाँ उसको केवल कष्ट ही मिलता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का वैवाहिक जीवन दुःखमय रहता है। भाई बहनों से परेशान रहता है। पारिवारिक अन्य सदस्यों से मलिनता रहती है। रिश्तेदार एवं मित्रगण धोखा देते रहते हैं। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है। जातक को समय-समय पर रोग व्याधि ग्रसित करती रहती हैं जिसमें अधिक धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति भी असामान्य हो जाती है। अर्थोपार्जन के लिए विशेष संघर्ष करना पड़ता है, परन्तु उसमें सफलता संदिग्ध रहती है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जीवन मानसिक रूप से उद्विग्न रहता है।

इस योग के कारण जातक को कानूनी मामलों में विशेष रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। राज्यपक्ष से प्रतिकूलता रहती है। जातक को नौकरी व्यवसाय आदि के क्षेत्र में निलम्बन या नुकसान उठाना पड़ता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अपने जीवन में बहुत सफलता प्राप्त करता है। विलम्ब से उत्तम भाग्य का निर्माण भी होता है और शुभ कार्य सम्पादन हेतु कई अवसर प्राप्त होते हैं।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 16 सोमवार का व्रत करें।
3. राहु मन्त्र का 18000 (अठारह हजार) उनकी महादशा, अन्तर्दशा में करें या करवायें।
4. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
5. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
6. नव नाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
7. श्रावण मास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. तिरुपति बालाजी के समीप कालहस्ती शिवमन्दिर में जाकर कालसर्प योग की शान्ति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें।
9. श्रद्धापूर्वक पितरों का प्रतिवर्ष श्राद्धपक्ष में श्राद्ध करें। कम से कम सात वर्ष तक अवश्य करें।

10. सरस्वती जी की एक वर्ष तक विधिवत उपासना करें।
11. गोमेद, तिल, सरसों, कम्बल, खड़ग, नीलवस्त्र, शूर्प आदि समय समय पर दान करें।
12. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबालकर राहु की महादशा या अन्तर दशा आदि में सवा महीने तक स्नान करें।
13. शुभ मुहूर्त में नागपाश यन्त्र को अभिमन्त्रित कर धारण करें।
14. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।
15. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वास्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
16. मंगलवार एवं शनिवार को रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड का 108 बार पाठ श्रद्धापूर्वक करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।

आपकी कुंडली में बुध के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी, आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, कोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

तृतीय भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर

रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराकमी, धर्मात्मा, पुत्रवान्, बुद्धिमान्, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान्, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(18/05/2015 - 18/05/2034)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि की महादशा 18/05/2015 को आरम्भ और 18/05/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 19 वर्ष है।

शनि आपकी जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है और लोग बहुधा इससे डरते हैं। लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में यह विलम्ब और बाधाएं उत्पन्न करता है। फल प्राप्ति की दिशा में जातक को कठिन परिश्रम के लिये प्रेरित कर यह उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। आपकी जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि चौथे, आठवें और ग्यारहवें भाव पर है और इन भावों के कारकत्व पर इसका प्रभाव है। द्वितीय भाव, जिसमें यह स्थित है, सम्पत्ति, लाभ, सांसारिक सुख, दायीं आँख, कल्पनाशक्ति, जिह्वा, दाँत तथा पारिवारिक सदस्यों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

द्वितीय भाव, जो पारिवारिक सदस्यों का भाव है, में स्थित महादशा स्वामी शनि भाव को प्रबलित कर रहा है। इस दशा के दौरान आपको स्वास्थ्य की कोई गम्भीर समस्या अथवा दुर्घटना नहीं होगी और आप प्रसन्न रहेंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

द्वितीय भाव स्थित शनि अपने भाव को प्रबलित कर रहा है। इस दशा के दौरान आपके संसाधनों और चल-अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। आप दूसरों की सम्पत्ति का लाभ उठाएंगे और अनीति का सहारा भी लेंगे।

व्यवसाय :

आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, सम्पत्ति तथा साहस के स्वामी शनि की द्वितीय भाव में स्थिति के कारण व्यावसायिक दृष्टि से सुदृढ़ होंगे। सम्पत्ति का भाव आपको पर्याप्त धन और धनोपार्जन के स्रोत प्रदान करेगा। यदि आप नौकरीपेशा हैं तो आप की पदोन्नति के अनेक मार्ग खुलेंगे और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो अनेक नये उद्यम आपके मस्तिष्क में उभरेंगे और आप पर्याप्त धन अर्जित करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

यह दशा आपके पारिवारिक जीवन के लिए बहुत अनुकूल नहीं है। आपके पारिवारिक जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव आ सकते हैं। आपको पारिवारिक सुख नहीं मिलेगा क्योंकि आपका दूसरी स्त्रियों की ओर झुकाव है और आप दूसरों की सम्पत्ति हड़पना चाहेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा तथा साहित्यिक वृत्ति में विकास के लिए यह दशा अनुकूल नहीं है।

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

**अंतर्दशा :- शनि - शुक्र
(09/03/2022 - 09/05/2025)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/05/2015 को प्रारंभ होकर 18/05/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 09/03/2022 को प्रारंभ होकर 09/05/2025 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जाँघों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे, धनागम उत्तम होगा, समाज में प्रतिष्ठा होगी। प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। बहुत सी महिलाएं आपके अधीनस्थ कार्य कर सकती हैं। व्यापार में आप कुशल होंगे, चिकित्सा क्षेत्र में सफल हो सकते हैं। तंत्र-मंत्र आदि में सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- चींटियों को शक्कर और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।

**अंतर्दशा :- शनि - सूर्य
(09/05/2025 - 21/04/2026)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/05/2015 को प्रारंभ होकर 18/05/2034 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 09/05/2025 को प्रारंभ होकर 21/04/2026 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी जन्मपत्रिका के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप उपेक्षित महसूस कर सकते हैं। कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। संतान के कारण भी कठिनाइयां आ सकती हैं। निराश हो सकते हैं। किसी गैरकानूनी कार्य से संबद्ध हो सकते हैं जिससे नेत्रों की शक्ति क्षीण हो सकती है। यह अंतर्दशा शुभ नहीं रहेगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

**अंतर्दशा :- शनि - चन्द्र
(21/04/2026 - 20/11/2027)**

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 18/05/2015 को प्रारंभ होकर 18/05/2034 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के 9वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी बुद्धिमत्ता में उन्नति होगी, साहसी बनेंगे। जीवन में उपलब्धियां प्राप्त होंगी जिससे व्यक्तित्व उत्तम बनेगा। भाई-बहनों से संबंध अच्छे रहेंगे। लक्ष्यप्राप्ति में बाधाएं आ सकती हैं, मगर आप हिम्मत नहीं हारेंगे और अंततः सफल होंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - मंगल
(20/11/2027 - 29/12/2028)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 18/05/2015 को प्रारंभ होकर 18/05/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 20/11/2027 को प्रारंभ होकर 29/12/2028 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

द्वितीय भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 5, 8, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको लक्ष्य की प्राप्ति में बाधाएं आ सकती हैं मगर आय अच्छी होगी, धनी बनेंगे। इसके बावजूद आप कंजूस हो सकते हैं। परिवार में अशांति हो सकती है। कटु वचन बोलने से बचें अन्यथा परिवार और समाज में परेशानियां आ सकती हैं। नेत्र रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। ऊर्जा का दुरुपयोग न करें। इसका सही दिशा में उपयोग लाभकारी होगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन ब्रह्माजी के गायत्री मंत्र के 108 जाप करें और हनुमान मंदिर में जाकर उपासना करें।

**अंतर्दशा :- शनि - राहु
(29/12/2028 - 05/11/2031)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/05/2015 को प्रारंभ होकर 18/05/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 29/12/2028 को प्रारंभ होकर 05/11/2031 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है।

इस अवधि में आपके प्रत्येक विषय में स्वतंत्र विचार होंगे। इस कारण आपको आलोचना का शिकार होना पड़ सकता है। अचानक कोई अप्रत्याशित समाचार सुनने को मिल सकता है। इसके लिए आप बाहरी तौर पर गंभीर बने रहेंगे मगर घर से दूर जा सकते हैं। तृतीय भाव में स्थित राहु के कारण भाई, बहनों आदि का व्यवहार आपके प्रति नकारात्मक हो सकता है अतः सावधान रहना श्रेयस्कर होगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।